Chhuttiyan Kaise Guzaren ? (Hindi)

फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (क़िस्त : 38)

छुट्टियां कैसे गुज़ारें ?

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई ﷺ के मदनी मुज़ाकरे नम्बर 31 के मवाद समेत अल मदीनतुल इल्मिय्या के शो'बे "फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा" ने नई तरतीब और कसीर मवाद के साथ तय्यार किया है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(اَلْمُستطرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **"छुट्टियां कैसे गुज़ारें ?"**

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है । मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है ।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्मो ह़िक्मत से मा'मूर मदनी मुज़ाकरात और अपने तरबियत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए़ थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले मदनी मुज़ाकरात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त मसलन अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़तो त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़मर्रा मुआ़मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मुतअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ मदनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शो'बा **''फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा''** इन मदनी मुज़ाकरात को काफ़ी तरामीम व इज़ाफ़ों के साथ **''फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा''** के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ालआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद ह़ुसूले इल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा।

इस रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी ग़ैर इरादी कोताही का दख़्ल है।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)
16 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1439 सि.हि. / 03 मई 2018 ई.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

छुट्टियां कैसे गुज़ारें ?

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (31 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना गुनाहों को इस क़दर जल्द मिटाता है कि पानी भी आग को इतनी जल्दी नहीं बुझाता और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर सलाम भेजना गरदनें (या'नी गुलामों को) आज़ाद करने से अफ़्ज़ल है ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

छुट्टियां कैसे गुज़ारें ?

सुवाल : तुलबा और असातिज़ा ता'लीमी इदारों में होने वाली सालाना छुट्टियां कैसे गुज़ारें ?

مدینہ

1 ..... تاریخ بغداد، باب الجیم، ذکر من اسمہ جعفر، جعفر بن عیسٰی، ۷/۱۷۰، رقم: ۳۶۰۷ دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

जवाब : स्कूल कॉलेजिज़ वग़ैरा में पढ़ने और पढ़ाने वाले तुलबा और असातिज़ा सारा साल दुन्यवी ता'लीम की मस्रूफ़िय्यत की वज्ह से दीनी ता'लीम की त़रफ़ तवज्जोह नहीं दे पाते लिहाज़ा उन्हें चाहिये कि जब छुट्टियां हों तो उन्हें ग़नीमत समझते हुए उन में ख़ूब ख़ूब इल्मे दीन ह़ासिल करने की कोशिश करें। इल्मे दीन सीखने का बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल है, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में आ़म इस्लामी भाइयों के लिये 63 दिन का मदनी तरबियती कोर्स, 12 दिन का इस्लाह़े आ'माल कोर्स, 12 दिन का मदनी काम कोर्स और 7 दिन का नमाज़ कोर्स करवाया जाता है जिस में न सिर्फ़ इल्मे दीन सिखाया जाता है बल्कि इस पर अ़मल करने और इसे दुन्या भर में फैलाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र भी करवाया जाता है लिहाज़ा छुट्टियों के मौक़अ़ पर येह मुफ़ीद तरीन कोर्स कर लिये जाएं اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ूब बरकतें नसीब होंगी। जहां दुन्या के रोशन मुस्तक़्बिल के लिये इतनी कोशिशें की जाती हैं वहां अपनी क़ब्रो आख़िरत बेहतर बनाने की भी कोशिश करनी चाहिये। उ़मूमन देखा गया है कि येह छुट्टियां भी लह्वो लइ़ब और दीगर फ़ुज़ूलिय्यात में गुज़ार दी जाती हैं ह़त्ता कि कई तुलबा इन छुट्टियों में सैरो तफ़रीह़ के लिये जाते हैं मगर वहीं किसी ह़ादिसे का शिकार हो कर मौत के घाट उतर जाते हैं।

www.dawateislami.net

ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्यवी ता'लीम में मुन्हमिक हो कर अपनी क़ब्रो आख़िरत को बिल्कुल फ़रामोश नहीं कर देना चाहिये । दुन्यवी ता'लीम मुकम्मल करने के दौरान ज़रूरी दीनी ता'लीम के हुसूल में हीले बहाने बनाने वालों और वक़्त होने के बा वुजूद सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की सआ़दत से ख़ुद को महरूम रखने वालों को सोचना चाहिये कि ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं, दुन्यवी ता'लीम मुकम्मल होने और रोशन मुस्तक़्बिल देखने तक ज़िन्दा रहेंगे या नहीं, इस की किसी के पास कोई ज़मानत (Guaranty) नहीं । अगर दुन्यवी ता'लीम की मस्रूफ़िय्यत की वज्ह से दीनी ता'लीम को वक़्त नहीं दे पाते तो कम अज़ कम छुट्टियों ही के इन फ़ारिग़ अवक़ात को, अपनी जवानी और सिह़्ह़त को ग़नीमत जानते हुए दीन के लिये वक़्त निकालिये और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये । हादिये राहे नजात, सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : पांच चीज़ों को पांच चीज़ों से पहले ग़नीमत जानो ! (1) जवानी को बुढ़ापे से पहले (2) सिह़्ह़त को बीमारी से पहले (3) मालदारी को तंगदस्ती से पहले (4) फ़ुरसत को मश्ग़ूलिय्यत से पहले और (5) ज़िन्दगी को मौत से पहले ।[1]

ग़ाफ़िल तुझे घड़ियाल येह देता है मुनादी
क़ुदरत ने घड़ी उ़म्र की इक और घटा दी

---

1 ..... مستدرک حاکم، کتاب الرقاق، نعمتان مغبون...الخ، ۵/۴۳۵، حدیث: ۷۹۱۶ دار المعرفۃ بیروت

www.dawateislami.net

कौन सा इल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़ है ?

सुवाल : मुसल्मान पर कौन कौन सी चीजें सीखना ज़रूरी हैं ? नीज़ अपनी औलाद को कब से क्या सिखाया जाए ?

जवाब : सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ या'नी इल्म ह़ासिल करना हर मुसल्मान पर फ़र्ज़ है ।[1] इस ह़दीसे पाक से स्कूल कॉलेज की मुरव्वजा दुन्यवी ता'लीम नहीं बल्कि ज़रूरी दीनी इल्म मुराद है । लिहाज़ा सब से पहले इस्लामी अ़क़ाइद का सीखना फ़र्ज़ है, इस के बा'द नमाज़ के फ़राइज़ व शराइत़ व मुफ़्सिदात (या'नी नमाज़ किस त़रह़ दुरुस्त होती है और किस त़रह़ टूट जाती है) फिर रमज़ानुल मुबारक की तशरीफ़ आवरी हो तो जिस पर रोज़े फ़र्ज़ हों उस के लिये रोज़ों के ज़रूरी मसाइल, जिस पर ज़कात फ़र्ज़ हो उस के लिये ज़कात के ज़रूरी मसाइल, इसी त़रह़ ह़ज फ़र्ज़ होने की सूरत में ह़ज के, निकाह़ करना चाहे तो उस के, ताजिर को तिजारत के, ख़रीदार को ख़रीदने के, नोकरी करने वाले और नोकर रखने वाले को इजारे के, وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس (या'नी और इसी पर क़ियास करते हुए) हर मुसल्मान आ़क़िल व बालिग़ मर्द व औ़रत पर उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है । इसी त़रह़ हर एक के लिये मसाइले ह़लाल व ह़राम भी सीखना फ़र्ज़ है । नीज़ मसाइले क़ल्ब (बात़िनी मसाइल)

मदीना

1 ...... إبن ماجه، كتاب السنة، باب فضل العلماء ... الخ، ١/١٤٦، حديث: ٢٢٤ دار المعرفة بيروت

www.dawateislami.net

या'नी फ़राइज़े क़ल्बिय्या (बातिनी फ़राइज़) मसलन आ़जिज़ी व इख़्लास और तवक्कुल वग़ैरहा और इन को ह़सिल करने का त़रीक़ा और बातिनी गुनाह मसलन तकब्बुर, रियाकारी, ह़सद, बद गुमानी, बुग़्ज़ो कीना, शमातत (या'नी किसी की मुसीबत पर ख़ुश होना) वग़ैरहा और इन का इ़लाज सीखना हर मुसल्मान पर फ़र्ज़ है (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या जिल्द 23 सफ़ह़ा 613 ता 624 मुलाह़ज़ा फ़रमाइये) मोहलिकात या'नी हलाकत में डालने वाली चीज़ों जैसा कि वा'दा ख़िलाफ़ी, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, बोहतान, बद निगाही, धोका, ईज़ाए मुस्लिम वग़ैरा वग़ैरा तमाम सग़ीरा व कबीरा गुनाहों के बारे में ज़रूरी अह़काम सीखना भी फ़र्ज़ है ताकि इन से बचा जा सके[1] ।[2]

---

1 ..... नेकी की दा'वत, स. 136, मक्तबतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

2 ..... **इस्लामी अ़क़ाइद** की मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ कुतुब "किताबुल अ़क़ाइद", "बहारे शरीअ़त ह़िस्सए अव्वल", "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब", "तम्हीदुल ईमान" और **ज़रूरत के मसाइल** जानने के लिये "नमाज़ के अह़काम", "बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 02 ता 08, ह़िस्सा 11 से इजारा (या'नी मुलाज़िम रखने और मुलाज़िम होने के मसाइल) और ह़िस्सा 14 से बैअ़ व शराअ (या'नी ख़रीदो फ़रोख़्त के मसाइल)" **मसाइले ह़लाल व ह़राम** जानने के लिये "101 मदनी फूल", "163 मदनी फूल", "सुन्नतें और आदाब", "बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16" **मोहलिकात व मुन्जिय्यात** जानने के लिये "बातिनी बीमारियों का इ़लाज", "नजात दिलाने वाले आ'माल की मा'लूमात", "बेटे को नसीह़त", "मिन्हाजुल आ़बिदीन", "एह़याउल उ़लूम" और कीमियाए सआ़दत" का मुत़ालआ़ कीजिये । (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

www.dawateislami.net

तज्वीद के साथ कुरआने पाक सीखना भी ज़रूरी है। आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : बिला शुबा इतनी तज्वीद जिस से तस्ह़ीह़े हुरूफ़ हो (या'नी क़वाइ़दे तज्वीद के मुत़ाबिक़ हुरूफ़ को दुरुस्त मख़ारिज से अदा कर सके) और ग़लत़ ख़्वानी (या'नी ग़लत़ पढ़ने) से बचे, फ़र्ज़े ऐ़न है।[1] इसी त़रह़ अज़्कारे नमाज़ (या'नी नमाज़ में तिलावत के इ़लावा जो कुछ पढ़ा जाता है उन) का दुरुस्त आना भी ज़रूरी है। जिस ने سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِیْم में "عَظِیْم" को عزیم (ظ के बजाए ز) पढ़ दिया नमाज़ जाती रही लिहाज़ा जिस से "عَظِیْم" सह़ीह़ अदा न हो वोह سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْکَرِیْم पढ़े।[2] यूं ही जो कुरआने पाक याद है उस का ह़िफ़्ज़ बाक़ी रखना भी ज़रूरी है। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत़्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : कुरआन पढ़ कर भुला देना गुनाह है। जो कुरआनी आयात याद करने के बा'द भुला देगा बरोज़े क़ियामत अन्धा उठाया जाएगा[3]।[4]

मदीना

1 ..... फ़तावा रज़विय्या, 6/343, रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कज़ुल औलिया लाहोर

2 ..... क़ानूने शरीअ़त, स. 186, मक्तबतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

3 ..... बहारे शरीअ़त, 1/552-553, ह़िस्सा : 3, मुल्तक़त़न, मक्तबतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

4 ..... मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के रिसाले, फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा क़िस्त 34 "शैत़ान के लिये ज़ियादा सख़्त कौन ?" का मुत़ालआ़ कीजिये। (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

www.dawateislami.net

जहां तक औलाद को सिखाने की बात है तो क़ुरआने पाक सिखाए, सात बरस की उ़म्र में नमाज़ का हुक्म देने के साथ ही नमाज़ और त़हारत के ज़रूरी मसाइल भी सिखाए कि सात से नव बरस की उ़म्र बच्चों की तरबियत के तअ़ल्लुक़ से बिल ख़ुसूस मदनी मुन्नियों के लिये बेह़द अहम है कि मदनी मुन्नी इस के बा'द कभी भी बालिग़ा हो सकती है। इन उ़लूम के सिखाने के बा'द दुन्यवी ता'लीम भी अपनी शराइत़ के साथ दी जा सकती है। आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : अहले सुन्नत व जमाअ़त के अ़क़ीदे और त़हारत व नमाज़ व रोज़ा के मस्अले सीखना सब पर फ़र्ज़ है। इन ज़रूरिय्यात और क़ुरआने अ़ज़ीम पढ़ने के बा'द फिर अगर उर्दू या गुजराती की दुन्यवी किताब जिस में कोई बात न दीन के ख़िलाफ़ हो न बेशर्मी की, न अख़्लाक़ो आ़दात पर बुरा असर डालने की और पढ़ाने वाली औ़रत सुन्नी मुसल्मान पारसा ह़यादार हो तो कोई ह़रज नहीं[1] ।[2]

---

1 ..... फ़तावा रज़विय्या, 23/693 मुल्तक़त़न

2 ..... बच्चों की तरबियत के ह़वाले से मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब "तरबियते औलाद" और फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा क़िस्त 24 "बच्चों की तरबियत कब और कैसे की जाए ?" का मुत़ालआ़ कीजिये।

(शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

www.dawateislami.net

ग़ैर महरम से हुनर या फ़न सीखना सिखाना कैसा ?

सुवाल : ग़ैर महरम से कोई हुनर या फ़न सीखना या उन्हें सिखाना कैसा है ?

जवाब : पांच सात साल के बच्चे और बच्चियां हों तो इन के सीखने में कोई मुज़ायक़ा नहीं अलबत्ता जवान लड़कों और लड़कियों के एक दूसरे के पास सीखने सिखाने में बहुत ज़ियादा ख़तरात हैं। उमूमन येह सीखने सिखाने का सिल्सिला बे पर्दगी और बे तकल्लुफ़ी के साथ होता है जो कि हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। अगर येह एक दूसरे को न भी छूएं तब भी बद निगाही से अपने आप को बचाना इन्तिहाई मुश्किल है। ग़ैरत मन्द मुसल्मान कभी भी अपने बच्चे और बच्चियों के ऐसे माहोल में सीखने सिखाने का एहतिमाम नहीं कर सकते। ग़ैर महरम से पर्दा ही पर्दा है, बिला इजाज़ते शरई किसी की रिआयत नहीं। आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 23 सफ़हा 639 पर फ़रमाते हैं : "रहा पर्दा इस में उस्ताज़ व ग़ैरे उस्ताज़, आलिम व ग़ैरे आलिम, पीर सब बराबर हैं।"

www.dawateislami.net

त़ालिबात को नौ जवान उस्ताद से पढ़ने की मुमानअ़त

हुनर या फ़न सीखना सिखाना तो दूर की बात, इल्मे दीन पढ़ना हो और पढ़ने वाली त़ालिबात बा पर्दा भी हों मगर पढ़ाने वाला उस्ताद जवान है तब भी त़ालिबात को उस के पास जाने और पढ़ने की शरअ़न इजाज़त नहीं कि पर्दे के बा वुजूद पढ़ने वालियां लगी बंधी और जानी पहचानी होती हैं लिहाज़ा ख़त़रात बहुत ज़ियादा होते हैं । आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने इसी बिना पर पर्दे की तमाम तर पाबन्दी के बा वुजूद औ़रत को इल्मे दीन सीखने के लिये जवान पीर के पास जाने की इजाज़त नहीं दी चुनान्चे फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में फ़रमाते हैं : अगर बदन मोटे और ढीले कपड़ों से ढका है, न ऐसे बारीक (कपड़े) कि बदन या बालों की रंगत चमके न ऐसे तंग (कपड़े) कि बदन की ह़ालत (या'नी किसी उ़ज़्व की गोलाई या उभार वग़ैरा) दिखाएं और जाना तन्हाई में न हो और पीर जवान न हो, ग़रज़ कोई फ़ितना न फ़िलह़ाल हो न (आयिन्दा के लिये) इस का अन्देशा हो तो इल्मे दीन (और) उमूरे राहे ख़ुदा सीखने के लिये जाने और बुलाने में (कोई) ह़रज नहीं ।[1] इस से वोह लोग दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करें जो बे पर्दगी के माह़ोल में कोई फ़न या काम सीखते या सिखाते हैं ।

---

1 ..... फ़तावा रज़विय्या, 22/240

www.dawateislami.net

पर्दे में सुन्नी आ़लिमे दीन का बयान सुनना जाइज़ है

हां पर्दे की ह़ालत में सुन्नी आ़लिमे दीन का बयान सुनना जाइज़ है कि बयान सुनने और पढ़ने में बहुत फ़र्क़ है। आ़'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : औ़रतें नमाज़े मस्जिद से मम्नूअ़ हैं और वाइ़ज़ (या'नी वा'ज़ कहने वाला) या मीलाद ख़्वां अगर आ़लिम सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा हो और उस का वा'ज़ व बयान सह़ीह़ व मुत़ाबिक़े शर्अ़ हो और (औ़रत के आने) जाने में पूरी एह़तियात़ और कामिल पर्दा हो और कोई एह़तिमाले फ़ितना (या'नी फ़ितने का ख़ौफ़) न हो और मजलिसे रिजाल (या'नी मर्दों की बैठक) से दूर (जहां एक दूसरे पर नज़र न पड़ती हो) इन की निशस्त हो तो ह़रज नहीं।[1]

बे पर्दा माह़ोल के नुक़्सानात

सुवाल : ग़ैर मह़ारिम के आपस में बे पर्दा और दोस्ताना माह़ोल रखने के क्या नुक़्सानात हैं ?

जवाब : ग़ैर मह़ारिम का आपस में बे पर्दा और दोस्ताना माह़ोल रखना सरासर ना जाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। इन बे पर्दगियों और बे तकल्लुफ़ियों के दुन्यवी व उख़्वी नुक़्सानात हर ग़ैरत मन्द मुसल्मान बा ख़ूबी समझ सकता है।

1 ..... फ़तावा रज़विय्या, 22/239

www.dawateislami.net

इसी मख़्लूत माहौल के करिश्मे हैं कि आज नौ जवान लड़कियों के घरों से भागने की ख़बरें सुनने को मिलती हैं जिस से वालिदैन और पूरे ख़ानदान की बदनामी होती है। इस के मुजरिम ख़ुद वालिदैन भी होते हैं कि अगर वोह अपनी औलाद की शरीअ़त के मुताबिक़ ता'लीमो तरबियत का एहतिमाम करते तो आज उन्हें रुस्वाई के दिन न देखने पड़ते। शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने औरतों को घरों में ठहरने, बा पर्दा रहने और ग़ैर मर्द से बिला ज़रूरत गुफ़्तगू करने से बचने का हुक्म दिया है, अगर ज़रूरतन ग़ैर मर्द से बात करनी भी पड़े तब भी उन्हें लहजे में नज़ाकत और बात में नरमी पैदा करने से मन्अ़ किया है चुनान्चे इर्शादे बारी तआ़ला है :

اِنِ اتَّقَیْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَیَطْمَعَ الَّذِیْ فِیْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّ قُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿۳۲﴾ وَ قَرْنَ فِیْ بُیُوْتِكُنَّ وَ لَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِیَّةِ الْاُوْلٰى

(پ۲۲، الاحزاب: ۳۲-۳۳)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अगर **अल्लाह** से डरो तो बात में ऐसी नरमी न करो कि दिल का रोगी (मरीज़) कुछ लालच करे, हां अच्छी बात कहो और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी।

इस आयते मुबारका के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल अ़ल्लामा सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : इस में ता'लीमे आदाब है कि अगर ब ज़रूरत ग़ैर

www.dawateislami.net

मर्द से पसे पर्दा गुफ़्तगू करनी पड़े तो क़स्द करो कि लहजा में नज़ाकत न आने पाए और बात में लोच (या'नी नरमी) न हो, बात निहायत सादगी से की जाए, इफ़्फ़त मआब ख़वातीन के लिये येही शायां है । दीनो इस्लाम की और नेकी की ता'लीम और पन्दो नसीहत की अगर ज़रूरत पेश आए (तो बात करो) मगर बे लोच लहजे से । अगली जाहिलिय्यत से मुराद क़ब्ले इस्लाम का ज़माना है उस ज़माने में औरतें इतराती निकलती थीं, अपनी ज़ीनत व महासिन का इज़्हार करती थीं कि ग़ैर मर्द देखें, लिबास ऐसे पहनती थीं जिन से जिस्म के आ'ज़ा अच्छी तरह न ढकें और पिछली जाहिलिय्यत से अख़ीर ज़माना मुराद है जिस में लोगों के अफ़आल पहलों की मिस्ल हो जाएंगे ।

औरतों के लिये चादर और चार दीवारी का हुक्म

सुवाल : क्या चादर और चार दीवारी औरतों की तरक़्क़ी में रुकावट का सबब है ?

जवाब : चादर और चार दीवारी औरतों की तरक़्क़ी में रुकावट का सबब नहीं बल्कि उन के लिये दुन्या व आख़िरत की तरक़्क़ी व काम्याबी का सबब है क्यूं कि चादर (या'नी पर्दा करने) और चार दीवारी (या'नी घर में रहने) का हुक्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

ने दिया है जैसा कि ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है : ﴿وَقَرْنَ فِیْ بُیُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ﴾ (پ۲۲، الاحزاب: ۳۳) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो।" रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : औ़रत छुपाने की चीज़ है, जब वोह अपने घर से निकलती है तो शैत़ान उसे झांकता है और औ़रत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़ियादा क़रीब उस वक़्त होती है जब वोह अपने घर में होती है।[1] यक़ीनन **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़कामात की बजा आवरी में ही तरक़्क़ी और दुन्या व आख़िरत की काम्याबी है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी कर के कोई ब ज़ाहिर दुन्या में कितनी ही तरक़्क़ी कर ले बिल आख़िर वोह नाकाम व ना मुराद ही है क्यूं कि दुन्या की ज़िन्दगी फ़ानी और धोके का माल है। ह़क़ीक़ी तरक़्क़ी व काम्याबी तो येह है कि इन्सान अपनी ज़िन्दगी शरीअ़त के अह़काम के मुत़ाबिक़ गुज़ारने, जहन्नम की आग से ख़ुद को बचाने और जन्नत में दाख़िल हो जाने में काम्याब हो जाए जैसा कि ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

---

1 .....صحیح ابن خزیمة، کتاب الامامة فی الصلاة، باب اختیار صلاة المرأة فی بیتها...الخ، ۳/۹۳، حدیث: ۱۶۸۵ المکتب الاسلامی بیروت

www.dawateislami.net

فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ وَمَا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۱۸۵﴾ (پ۴، اٰل عمران: ۱۸۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वोह मुराद को पहुंचा और दुन्या की ज़िन्दगी तो येही धोके का माल है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! औ़रत का मा'ना ही छुपाने की चीज़ है लिहाज़ा औ़रतों को बिला ज़रूरत घरों से बाहर न जाने दिया जाए इसी में उन की हिफ़ाज़त और आ़फ़िय्यत है। अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़कामात और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस फ़रामीन की ख़िलाफ़ वर्ज़ी कर के दुन्या तरक़्क़ी कर के आगे बढ़ती है तो हमें पीछे रह जाना ही मन्ज़ूर है। हम शरीअ़ते मुत़ह्हरा के अह़कामात पर अ़मल कर के اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपने मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे पीछे सीधे जन्नत में चले जाऐंगे।[1]

बाग़े जन्नत में मुह़म्मद मुस्कुराते जाएंगे
फूल रह़मत के झड़ेंगे हम उठाते जाएंगे

مدینہ

1 .....पर्दे के बारे में मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की किताब "पर्दे के बारे में सुवाल जवाब" का मुत़ालआ़ कीजिये। (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

www.dawateislami.net

इम्तिहान में नक़्ल करना कैसा ?

सुवाल : इम्तिहान में नक़्ल (Cheating) करना कैसा है ?

जवाब : इम्तिहान में नक़्ल (Cheating) करना न तो शर्अ़न दुरुस्त है और न ही अ़क़्लन । शर्अ़न इस लिये दुरुस्त नहीं कि इस में धोका देना है और धोका देने वाले के लिये ह़दीसे पाक में जन्नत से मह़रूमी की सख़्त वईद बयान फ़रमाई गई है चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : तीन शख़्स जन्नत में दाख़िल नहीं होंगे : (1) धोकेबाज़ (2) बख़ील (3) एह़सान जताने वाला ।[1] नीज़ नक़्ल करते हुए पकड़े जाने की सूरत में ज़िल्लत का सामना करना पड़ता है । और एक मुसल्मान का ख़ुद को ज़िल्लत पर पेश करना हरगिज़ जाइज़ नहीं चुनान्चे सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : مَنْ اَعْطَى الذِّلَّ مِنْ نَّفْسِهٖ طَائِعًا غَيْرَ مُكْرَهٍ فَلَيْسَ مِنَّا या'नी जो शख़्स बिला इक्राह (या'नी शरई मजबूरी के बिग़ैर) अपने आप को बख़ुशी ज़िल्लत पर पेश करे वोह हम में से नहीं ।[2] नक़्ल करना अ़क़्लन भी दुरुस्त नहीं इस लिये कि इम्तिहान का मक़्सद याद दाश्त और मेह़नत की कसोटी (या'नी जांच पड़ताल) है जब कि नक़्ल की सूरत में येह मक़्सद ह़ासिल नहीं हो सकता ।

مدینہ

1 ..... کنز العمال، کتاب الأخلاق، حرف المیم ... الخ، الجزء: ۳، ۲/۲۱۸، حدیث: ۷۸۲۳ دار الکتب العلمیة بیروت

2 ..... معجم اوسط، باب الألف، من اسمه احمد، ۱/۱۴۷، حدیث: ۴۷۱ دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

नेकी की दा'वत आ़म करने में असातिज़ा का किरदार

सुवाल : एक उस्ताद अपने शो'बे में नेकी की दा'वत आ़म कर के किस क़दर दीने इस्लाम को फ़ाएदा पहुंचा सकता है ?

जवाब : जो लोग मर्जए ख़लाइक़ होते हैं (या'नी ऐसे अश्ख़ास जो लोगों की अ़क़ीदतों और मह़ब्बतों का मर्कज़ हों, जहां सब लोग रुजूअ़ करें) वोह दूसरों के मुक़ाबले में दीन का काम ज़ियादा कर सकते हैं क्यूं कि उन्हें किसी के पास जाने की ज़रूरत नहीं होती, लोग ख़ुद ब ख़ुद उन के पास चले आते हैं मसलन ह़ाकिम, पीराने उ़ज़्ज़ाम, असातिज़ए किराम और वालिदैन कि उन के मा तह़्त अ़वाम, मुरीदीन, तलामिज़ा और बच्चे वग़ैरा होते हैं इस ह़वाले से उन पर येह ज़िम्मेदारी आ़इद होती है कि येह उन की निगह्बानी करते हुए उन्हें नेकियों की शाहराह पर गामज़न करने और गुनाहों से बचाने में अपना किरदार अदा करें कि बरोज़े क़ियामत इन से मा तह़्तों के बारे में पूछा जाएगा चुनान्चे बह़्रो बर के बादशाह, दो आ़लम के शहन्शाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम सब अपने मुतअ़ल्लिक़ीन के सरदार व ह़ाकिम हो और ह़ाकिम से रोज़े क़ियामत उस की रइय्यत के बारे में पूछा जाएगा ।(1)

مدینہ

1 ...... بخاری، کتاب الجمعة، باب الجمعة فی القریٰ و المدن، ۱/۳۰۹، حدیث: ۸۹۳ دار الکتب العلمیة بیروت

www.dawateislami.net

इस ह़दीसे पाक के तह़्त शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : अ़वाम सुल्त़ान और ह़ाकिम के, औलाद मां बाप के, तलामिज़ा असातिज़ा के, मुरीदीन पीर के रिआ़या हुए, निगह़्बानी में येह भी दाख़िल है कि रिआ़या गुनाह में मुब्तला न हो ।[1]

असातिज़ा अपने तलामिज़ा के ह़ाकिम हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि असातिज़ा भी अपने तलामिज़ा के लिये ह़ाकिम हैं लिहाज़ा उन्हें वक़्तन फ़ वक़्तन तलामिज़ा को नसीह़त करते रहना चाहिये और येह असातिज़ा के लिये कोई मुश्किल बात भी नहीं क्यूं कि असातिज़ा की ह़ैसिय्यत एक मरजअ़ की सी है तुलबा के साथ साथ उन के वालिदैन वग़ैरा भी असातिज़ा से वाबस्ता होते हैं तो यूं असातिज़ा उन पर इन्फ़िरादी कोशिश कर के उन्हें क़रीब ला कर दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की धूमें मचा सकते हैं। असातिज़ा को चाहिये कि वोह तुलबा को मदनी इन्आ़मात पर अ़मल, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त और मदनी मुज़ाकरात में शिर्कत करने की दा'वत देते रहा करें और साथ ही साथ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ कुतुब व रसाइल

1 ..... नुज़्ह़तुल क़ारी, 2/530 मुल्तक़त़न, फ़रीद बुक स्टॉल, मर्कज़ुल औलिया लाहोर

www.dawateislami.net

पढ़ने की तरग़ीब भी दिलाते रहा करें ताकि उन की इस्लाह़ का सामान हो सके। अगर एक साथ कई छुट्टियां आ रही हों तो उन से फ़ाएदा उठाते हुए ख़ुद भी सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करें और तुलबा को भी सफ़र करवाएं اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के साथ साथ सारी दुन्या के लोगों की भी इस्लाह़ होगी और नेकी की दा'वत की धूमें भी मच जाएंगी ।

ता'लीमी इदारों में मदनी काम

सुवाल : ता'लीमी इदारों (स्कूल, कॉलेज और यूनीवर्सिटी वग़ैरा) में दा'वते इस्लामी का मदनी काम किस त़रह़ किया जाए ?

जवाब : किसी भी इदारे में मदनी काम करने और इस में ख़ातिर ख़्वाह नताइज ह़ासिल करने के लिये ज़रूरी है कि इसी इदारे से मुतअ़ल्लिक़ा अफ़राद पर इन्फ़िरादी कोशिश कर के उन्हें तय्यार किया जाए और फिर उन्हें मदनी काम की ज़िम्मेदारी सोंप दी जाए । जब उस इदारे से वाबस्ता अफ़राद मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर ज़िम्मेदारी लेंगे तो फिर اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी कामों की धूमें मच जाएंगी । स्कूल, कॉलेज और जामिआ़त (Universities) के तुलबा, असातिज़ा और मुन्तज़िमीन से रवाबित़ क़ाइम कर के उन्हें हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की दा'वत दीजिये और उन पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन्हें मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की तरग़ीब दिलाइये । रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स दीजिये और क़रीबी मस्जिद में मद्रसतुल

www.dawateislami.net

मदीना बराए बालिग़ान की तरकीब बनाइये ताकि इन्फ़िरादी कोशिश करने का भरपूर मौक़अ़ मिल सके कॉलेज और यूनीवर्सिटी से मुल्हक़ा मसाजिद में इन्तिज़ामिया से इजाज़त ले कर मदनी क़ाफ़िले ठहराइये और दारुल इक़ामह (HOSTEL) में जा कर ख़ूब नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये। **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आ़शिक़ाने रसूल की सुन्नतों भरी मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी ने नेकी की दा'वत को दुन्या भर में आ़म करने के लिये जहां दीगर बहुत सारी मजालिस बनाई हैं वहीं एक मजलिस बनाम "मजलिस बराए शो'बए ता'लीम" भी बनाई है जो ता'लीमी इदारों मसलन स्कूल्ज़, कॉलेजिज़ और यूनीवर्सिटीज़ के असातिज़ा व तलामिज़ा को मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतों से रू शनास करवाने में मस्रूफ़े अ़मल है। इस मजलिस की बरकत से बे शुमार तुलबा सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत करते, मदनी इन्आ़मात के रिसाले पुर करते और मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर भी बनते रहते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुतअ़द्दद दुन्यवी उ़लूम के दिलदादा बे अ़मल तुलबा, नमाज़ी और सुन्नतों के आ़दी बन गए हैं। स्कूल कॉलेज और यूनीवर्सिटी के तुलबा, असातिज़ा और स्टाफ़ को मज़ीद ज़रूरिय्याते दीन से रू शनास करवाने के लिये मदनी माह़ोल में अपनी नौइय्यत का मुन्फ़रिद "फ़ैज़ाने कुरआनो ह़दीस कोर्स" और इस के इलावा मुख़्तलिफ़ दीगर कोर्सिज़ का भी एहतिमाम किया गया है।

www.dawateislami.net

इन्टरनेट के मुस्बत व मन्फ़ी असरात

सुवाल : इन्टरनेट के मुस्बत व मन्फ़ी इस्ति'माल के मुतअ़ल्लिक़ कुछ मदनी फूल अ़ता फ़रमा दीजिये ।

जवाब : इन्टरनेट के इस्ति'माल के मन्फ़ी असरात ज़ियादा हैं जब कि मुस्बत असरात बहुत कम हैं । ईमान व अख़्लाक़ सोज़ मवाद पर मब्नी वेब साइट्स की भरमार है, अचानक ह़यासोज़ तसावीर सामने आ जाती हैं अब उस से फ़ौरन निगाह हटाने के बजाए लुत़्फ़ अन्दोज़ होते हुए निगाह ठहरा दी तो यूं गुनाहों का इरतिकाब हो जाता है । ऐसी सूरते ह़ाल में अपने आप को बद निगाही से बचाना इन्तिहाई दुश्वार होता है लिहाज़ा बिला ज़रूरत इन्टरनेट के इस्ति'माल से इज्तिनाब किया जाए, अगर ज़रूरत हो तो ब क़दरे ज़रूरत मुतअ़ल्लिक़ा वेबसाइट ही खोली जाए, अगर अचानक फ़ोह़्श तसावीर सामने आ जाएं तो स्क्रीन से फ़ौरन अपनी निगाहें फेर लीजिये या वेबसाइट का पेज (Page) तब्दील कर दीजिये और अपने आप को बद निगाही से बचाइये । अगर्चे आप अच्छा काम ही कर रहे हों तब भी अपनी निगाहों की ह़िफ़ाज़त करना और ह़यासोज़ मनाज़िर देखने से ख़ुद को बचाना ज़रूरी है । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लाअ बिन ज़ियाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْجَوَاد ने यहां तक फ़रमाया है कि "अपनी नज़र को औ़रत की चादर पर भी न डालो क्यूं कि नज़र दिल में शहवत पैदा करती है ।"(1)

مدینہ

(1) ...... حلیۃ الاولیاء، العلاء بن زیاد، ۲/۲۷۷، رقم: ۲۲۱۷ دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

एक कुफ़्रिय्या अ़क़ीदा

सुवाल : मश्हूर मक़ूला है : "Matter can not be created and can not be destroyed" या'नी माद्दा न तो पैदा किया जा सकता है और न ही फ़ना हो सकता है । क्या येह अ़क़ीदा रखना दुरुस्त है ?

जवाब : येह कलिमए कुफ़्र है जो शख़्स ऐसा अ़क़ीदा रखे कि माद्दा एक ऐसी मख़्लूक़ है कि जिसे **अल्लाह** पाक ने पैदा नहीं किया ख़ुद ही पैदा हुवा है और कभी ख़त्म न होगा वोह दाइरए इस्लाम से ख़ारिज है क्यूं कि इस जुम्ले में **अल्लाह** तआ़ला के ख़ालिक़ और क़ादिर होने का इन्कार पाया जाता है जो कि सरीह़ कुफ़्र है । काएनात और जो कुछ इस में है सब का ख़ालिक़ व मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है जैसा कि ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ وَّكِیْلٌ ﴿۱۰۲﴾ (پ۷، الانعام: ۱۰۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हर चीज़ का बनाने वाला तो उसे पूजो और वोह हर चीज़ पर निगह़बान है ।

जितनी भी मख़्लूक़ात इस वक़्त मौजूद हैं या आयिन्दा वुजूद में आने वाली हैं बिल आख़िर सब को एक न एक दिन फ़ना होना है चुनान्चे इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

كُلُّ مَنْ عَلَیْهَا فَانٍ ﴿۲۶﴾ وَّیَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿۲۷﴾

(پ۲۷، الرحمن: ۲۶-۲۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है और बाक़ी है तुम्हारे रब की ज़ात अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाला ।

www.dawateislami.net

कुरआने मजीद व अहादीसे मुबारका में माद्दे के फ़ना होने की जा बजा मिसालें मौजूद हैं मसलन हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने जब अपना अ़सा मुबारक डाला तो वोह अज़्दहा बन कर जादूगरों के सांपों को निगल गया। उन जादूगरों का सामान (या'नी सांपों की मानिन्द नज़र आने वाली रस्सियां) जो तीन सो ऊंटों का बार था लेकिन इस के बा वुजूद भी उस अज़्दहे के हज्म (या'नी जसामत) में ज़र्रा भर भी इज़ाफ़ा नहीं हुवा बल्कि वोह सब का सब उस में फ़ना हो गया। येह माद्दे के पैदा होने और फ़ना होने की वाज़ेह मिसाल है।

याद रखिये ! किसी भी इल्म व फ़न का कोई भी ऐसा उसूल या ज़ाबिता जो कुरआन व हदीस से टकराए वोह हरगिज़ क़बूल नहीं किया जा सकता। कुरआन व सुन्नत का इल्म हक़ और यक़ीनी है जिस में तब्दीली की गुन्जाइश नहीं जब कि साइन्स वग़ैरा के उसूलो ज़वाबित ज़न्निय्यात (या'नी ग़ैर यक़ीनी मा'लूमात) पर मब्नी होते हैं येही वज्ह है कि वोह आए रोज़ बदलते रहते हैं लिहाज़ा किसी मुसल्मान को येह ज़ेब नहीं देता कि वोह साइन्सी उसूलो ज़वाबित की बुन्याद पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कुदरते कामिला और हिक्मते बालिग़ा का इन्कार करे।

www.dawateislami.net

फ़िरिश्ते, जिन्नात और शैत़ान के वुजूद का इन्कार करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़िरिश्ते, जिन्नात और शैत़ान का वुजूद है ? नीज़ नेकी की कुव्वत को फ़िरिश्ता और बदी की कुव्वत को शैत़ान कहना कैसा है ?

जवाब : फ़िरिश्ते, जिन्नात और शयात़ीन का वुजूद कुरआनो ह़दीस से साबित है लिहाज़ा इन के वुजूद का इन्कार करना और नेकी की कुव्वत को फ़िरिश्ता और बदी की कुव्वत को शैत़ान कहना कुफ़्र है। अफ़्सोस ! अब मुसल्मान दीनी अ़क़ाइद और इस्लामी ता'लीमात से बहुत दूर होते जा रहे हैं ह़त्ता कि एक किताब में येह जुम्ला "नेकी की कुव्वत का नाम फ़िरिश्ता और बदी की कुव्वत का नाम शैत़ान" भी मौजूद है। बिला शुबा येह क़ौल सरीह़ कुफ़्र है, इस लिये कि इस में फ़िरिश्तों और शैत़ान के वुजूद का इन्कार किया गया है।

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : येह कहना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने अ़ज़ीम में जिन फ़िरिश्तों का ज़िक्र फ़रमाया है न उन का कोई अस्ल वुजूद है न उन का मौजूद होना मुम्किन है, बल्कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी हर हर मख़्लूक़ में जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म की कुव्वतें रखी हैं जैसे पहाड़ों की सख़्ती, पानी की रवानी, नबातात की फ़ुज़ूनी (या'नी ज़ियादती) बस इन्हीं कुव्वतों का नाम फ़िरिश्ता है, येह

www.dawateislami.net

भी बिल क़त्ए़ वल यक़ीन (या'नी क़त्ई़ और यक़ीनी तौ़र पर) कुफ़्र है। यूंही जिन्न व शयातीन के वुजूद का इन्कार और बदी की कुव्वत का नाम जिन्न या शैता़न रखना कुफ़्र है और ऐसे अक़्वाल के क़ाइल (या'नी ऐसी बातों के कहने वाले) यक़ीनन काफ़िर और इस्लामी बरादरी से ख़ारिज हैं।[1]

बद क़िस्मती से आज कल हमारे मुआ़शरे में आ़म बोलचाल के दौरान ला इल्मी में ऐसे कलिमात बक दिये जाते हैं जिन पर बा'ज़ अवक़ात लुज़ूमे कुफ़्र और बा'ज़ अवक़ात इल्तिज़ामे कुफ़्र[2] का हुक्म लाज़िम आता है। हर एक को अपने ईमान की फ़िक्र करते हुए ख़ूब सोच समझ कर बोलना चाहिये कि बे ख़याली में निकला हुवा एक कलिमा ईमान की बरबादी और दुन्या व आख़िरत के ख़सारे का सबब बन सकता है। याद रखिये ! हा़लते कुफ़्र में किया गया निकाह़, बैअ़त और दीगर नेक आ'माल वग़ैरा सब बाति़ल हैं और अगर येह काम

1 ...... फ़तावा रज़विय्या, 29/384

2 ...... कुफ़्र की दो क़िस्में हैं : (1) लुज़ूमे कुफ़्र (2) इल्तिज़ामे कुफ़्र। लुज़ूमे कुफ़्र येह है कि जो बात कही वोह ऐ़ने कुफ़्र नहीं मगर कुफ़्र तक पहुंचाने वाली होती है और इल्तिज़ामे कुफ़्र येह है कि ज़रूरिय्याते दीन (वोह मसाइले दीन जिन को हर ख़ास व आ़म जानता हो उन) में से किसी चीज़ का वाज़ेह़ तौ़र पर ख़िलाफ़ करना येह क़त्अ़न इज्माअ़न (या'नी क़त्ई़ तौ़र पर बिल इत्तिफ़ाक़) कुफ़्र है अगर्चे ख़िलाफ़ करने वाला कुफ़्र के नाम से चिड़ता और कमाले इस्लाम का दा'वा करता हो। (फ़तावा रज़विय्या, 15/431 मुलख़्ख़सन) मज़ीद मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" का मुता़लआ़ कीजिये। (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

www.dawateislami.net

पहले से किये हुए थे तो कलिमए कुफ़्र बकने से तमाम नेक आ'माल अकारत हो गए या'नी पिछली सारी नमाज़ें, रोज़े, ह़ज वग़ैरा तमाम नेकियां ज़ाएअ़ हो गईं, शादी शुदा था तो निकाह़ भी टूट गया, अगर किसी का मुरीद था तो बैअ़त भी ख़त्म हो गई। उस पर फ़र्ज़ है कि उस कुफ़्र से फ़ौरन तौबा करे और कलिमा पढ़ कर नए सिरे से मुसल्मान हो। मुरीद होना चाहे तो अब नए सिरे से किसी भी जामेए़ शराइत़ पीर का मुरीद हो, अगर साबिक़ा बीवी को रखना चाहे तो दोबारा नए महर के साथ उस से निकाह़ करे और अगर फ़र्ज ह़ज पहले कर लिया था तो अब साहिबे इस्तित़ाअ़त होने पर नए सिरे से ह़ज करना फ़र्ज़ होगा।

एक "ग़लत़ लफ़्ज़" भी जहन्नम में झोंक सकता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अच्छी सोह़बतें कमयाब हो गईं। ज़बान की अ़दमे ह़िफ़ाज़त का दौर दौरा हो गया। हमारी अक्सरिय्यत की ह़ालत येह हो गई है कि जो मुंह में आया बक दिया ! अफ़्सोस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशी और ना ख़ुशी का एह़सास कम हो गया। ज़बान से निकले हुए अल्फ़ाज़ की अहम्मिय्यत के तअ़ल्लुक़ से एक इ़ब्रत अंगेज़ ह़दीसे पाक मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे राह़ते क़ल्बे नाशाद, मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है : बन्दा कभी **अल्लाह** तआ़ला की ख़ुशनूदी की बात कहता है और उस की त़रफ़ तवज्जोह भी नहीं करता (या'नी बा'ज़ बातें

www.dawateislami.net

इन्सान के नज़्दीक निहायत मा'मूली होती हैं) **अल्लाह** तआ़ला उस (बात) की वज्ह से उस के बहुत से दरजे बुलन्द करता है और कभी **अल्लाह** पाक की नाराज़ी की बात करता है और उस का ख़याल भी नहीं करता इस (बात) की वज्ह से जहन्नम में गिरता है ।[1] और एक रिवायत में है कि मशरिक़ व मग़रिब के दरमियान में जो फ़ासिला है उस से भी ज़ियादा फ़ासिले पर जहन्नम में गिरता है ।[2]

बक बक की येह आ़दत न सरे ह़श्र फंसा दे
अल्लाह ज़बां का हो अ़ता कुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश)

हाथ में आग की चिंगारी

आज कल ह़ालात ना गुफ़्ता बेह हैं, दुन्या की मह़ब्बत अक्सर के दिल पर ग़ालिब है, ईमान की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न कम हो गया ! ईमान बचाना भी ज़रूरी है मगर इस के लिये कोशिश करने का कोई ख़ास जज़्बा नहीं, ईमान को संभालना और अह़कामे इस्लाम की पैरवी करना नफ़्से बदकार पर एक अम्रे दुश्वार है। सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : लोगों पर एक ऐसा ज़माना भी आएगा कि उस वक़्त लोगों के दरमियान अपने दीन पर सब्र करने वाला, आग की चिंगारी पकड़ने वाले की त़रह़ होगा ।[3]

مدینہ

1 ..... بخاری، کتاب الرقاق، باب حفظ اللسان، ۴/۲۴۱، حدیث: ۶۴۷۸
2 ..... مسند امام احمد، مسند ابی ھریرۃ، ۳/۳۱۹، حدیث: ۸۹۳۱ دار الفکر بیروت
3 ..... ترمذی، کتاب الفتن، باب (ت: ۷۳)، ۴/۱۱۵، حدیث: ۲۲۶۷ دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

सुन्नत का तर्क कहीं कुफ़्र तक न पहुंचा दे !

हज़रते सय्यिदुना अबू मुहम्मद सहल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का फ़रमाने इब्रत निशान है : ख़ौफ़ का आ'ला दरजा येह है कि अपने बारे में **अल्लाह** पाक के इल्मे अज़ली के तअ़ल्लुक़ से डरता रहे (कि न जाने मेरे बारे में क्या तै है, आया अच्छा ख़ातिमा या कि बुरा ख़ातिमा !) और इस बात से भी ख़ौफ़ज़दा रहे कि कहीं कोई काम ख़िलाफ़े सुन्नत (या'नी सुन्नत को मिटाने वाली बुरी बिद्अ़त का इरतिकाब) न कर बैठे जिस की नुहूसत उसे कुफ़्र तक पहुंचा दे[1]

बहर हाल अगर किसी का इस त़रह़ का अ़क़ीदा हो या उस ने इस त़रह़ के कलिमात बोले हों तो उसे चाहिये कि अपने इन कुफ़्रिय्यात को तस्लीम करने के साथ साथ दिल में उन से नफ़रत व बेज़ारी का इज़्हार करते हुए तौबा में उन का तज़्किरा भी करे और कहे : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **मैं ने जो कलिमए कुफ़्र बका कि "माद्दा न तो पैदा किया जा सकता है और न ही फ़ना हो सकता है या फ़िरिश्ते, जिन्नात और शैत़ान के वुजूद का इन्कार किया है या नेकी की कुव्वत को फ़िरिश्ता और बदी की कुव्वत को शैत़ान कहा है" अपने इस कुफ़्र से तौबा करता हूं,** لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسولُ اللّٰه **या'नी अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं हज़रत मुहम्मद** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के रसूल हैं ।"** यूं कुफ़्र से तौबा भी हो जाएगी और तज्दीदे ईमान

---

1 ...... قُوتُ القلوب، شرح مقام الرجاء و وصف الراجين... الخ، ۱/۴۶۷ مرکز اھل سنت برکات رضا ھند

www.dawateislami.net

भी ।[1] **अल्लाह** पाक हमें दुन्या व आख़िरत की हर आफ़त व मुसीबत से बचाए और हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमाए । اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दुन्या में हर आफ़त से बचाना मौला
उ़क़्बा में न कुछ रन्ज दिखाना मौला
बैठूं जो दरे पाके पयम्बर के हुज़ूर
ईमान पे उस वक़्त उठाना मौला

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

ज़मीन व आस्मान साकिन हैं

सुवाल : क्या ज़मीन सूरज के गिर्द घूमती है ?

जवाब : ज़मीन सूरज के गिर्द नहीं घूमती बल्कि सूरज ज़मीन के गिर्द घूमता है । ज़मीन व आस्मान दोनों साकिन हैं और इन का साकिन होना महज़ **अल्लाह** तआ़ला की कुदरत व इख़्तियार से है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 22 **सूरए फ़ातिर** की आयत नम्बर 41 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿اِنَّ اللّٰهَ یُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۚ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "बेशक **अल्लाह** रोके हुए है आस्मानों और ज़मीन को कि जुम्बिश न करें ।" आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं ज़वाल के

---

1 ..... मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की 692 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" का मुत़ालआ़ कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात में इज़ाफ़े के साथ साथ ज़बान का कुफ़्ले मदीना लगाने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का भी ज़ेहन बनेगा ।

(शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

www.dawateislami.net

अस्ली मा'ना सरक्ना, हटना, जाना, ह़रकत करना और बदलना हैं, क़ुरआने अ़ज़ीम ने आस्मान व ज़मीन से इस की नफ़ी फ़रमाई तो ह़रकते ज़मीन व ह़रकते आस्मान दोनों बातिल हुई ।[1] हां सूरज मुतह़र्रिक है, सूरज का तुलूअ़ होना और ग़ुरूब होना उस के मुतह़र्रिक होने की वाज़ेह़ दलीलें हैं जैसा कि **अल्लाह** पाक का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَ اِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ

(پ۱۵، الکھف:۱۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ महबूब तुम सूरज को देख़ोगे कि जब निकलता है तो उन के ग़ार से दहनी त़रफ़ बच जाता है और जब डूबता है तो उन से बाईं त़रफ़ कतरा जाता है ।

हदीसे पाक में है : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को फ़रमाया जब कि सूरज ग़ुरूब हो चुका था "क्या तुम जानते हो कि सूरज कहां जाता है ?" ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه कहते हैं मैं ने अर्ज़ की, कि **अल्लाह** और उस का रसूल (عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) बेहतर जानते हैं । तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह जाता है ताकि अ़र्श के नीचे सज्दा करे । चुनान्चे वोह इजाज़त त़लब करता है तो उस को इजाज़त दे दी जाती है क़रीब है कि वोह सज्दा करे, वोह सज्दा उस की त़रफ़ से क़बूल न किया जाए और वोह इजाज़त त़लब करे तो उस को सज्दा करने की इजाज़त न दी जाए और उसे कहा जाए कि तू लौट जहां से आया है । फिर वोह मग़रिब से तुलूअ़ होगा । यही मा'ना है **अल्लाह** तआ़ला के इस इर्शादे

1 ..... फ़तावा रज़विय्या, 27/205-206 मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

पाक का ﴿وَالشَّمْسُ تَجْرِیْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِیْرُ الْعَزِیْزِ الْعَلِیْمِ ﴾ (پ۲۳، یٰسٓ:۳۸)[1] **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और सूरज चलता है अपने एक ठहराव के लिये येह हुक्म है ज़बर दस्त इल्म वाले का ।[2]

फ़ेहरिस्त

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	2	नेकी की दा'वत आम करने में असातिज़ा का किरदार	17
छुट्टियां कैसे गुज़ारें ?	2	असातिज़ा अपने तलामिज़ा के हाकिम हैं	18
ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं	4	ता'लीमी इदारों में मदनी काम	19
कौन सा इल्म हासिल करना फ़र्ज़ है ?	5	इन्टरनेट के मुस्बत व मन्फ़ी असरात	21
ग़ैर महरम से हुनर या फ़न सीखना सिखाना कैसा ?	9	एक कुफ़्रिय्या अक़ीदा	22
त़ालिबात को नौ जवान उस्ताद से पढ़ने की मुमानअ़त	10	फ़िरिश्ते, जिन्नात और शैत़ान के वुजूद का इन्कार करना कैसा ?	24
पर्दे में सुन्नी आ़लिमे दीन का बयान सुनना जाइज़ है	11	एक "ग़लत़ लफ़्ज़" भी जहन्नम में झोंक सकता है	26
बे पर्दा माहोल के नुक़्सानात	11	हाथ में आग की चिंगारी	27
औ़रतों के लिये चादर और चार दीवारी का हुक्म	13	सुन्नत का तर्क कहीं कुफ़्र तक न पहुंचा दे !	28
इम्तिहान में नक़्ल करना कैसा ?	16	ज़मीन व आस्मान साकिन हैं	29

1...... بخاری، کتاب بدء الخلق، باب صفة الشمس والقمر بحسبان، ۲/ ۳۷۸، حدیث: ۳۱۹۹

2...... ज़मीन व आस्मान के साकिन होने के बारे में मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये फ़तावा रज़विय्या जिल्द 27 में मौजूद आ'ला हज़रत عَلَیْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के रिसाले **नुज़ूले आयाते फ़ुरक़ान बि सुकूने ज़मीन व आस्मान** (ज़मीन और आस्मान के साकिन होने के बारे में ह़क़ व बात़िल के दरमियान फ़र्क़ करने वाली क़ुरआने मजीद की आयतों का नाज़िल होना) का मुत़ालआ़ कीजिये ।

(शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आशिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना **"फ़िक्रे मदीना"** के ज़रीए **मदनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। إِنْ شَاءَ اللّٰه عزوجل " अपनी इस्लाह़ के लिये **"मदनी इन्आमात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"मदनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। إِنْ شَاءَ اللّٰه عزوجل

M.R.P.
₹ 00

0133188

मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

अहमदआबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

देहली :- मक्तबतुल मदीना, 421, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली - 6, फ़ोन : 011-23284560

मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

हैदरआबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदरआबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 24572786

E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, Web : www.dawateislami.net